अमृतलाल नागर का साहित्य

डॉ. आर.एम. जाधव
डॉ. भगवान जाधव

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी

1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

फ़ोन : +91 9968084132, +91 9910947941

arpublishingco11@gmail.com

AMRITLAL NAGAR KA SAHITYA : UPLABDHI AUR PRADEY
Edited by Dr. R.M. Jadhav, Dr. Bhagwan N. Jadhav

ISBN : 978-93-862-36-21-0

© सम्पादकद्वय

संस्करण : 2017

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

अनुक्रमणिका

अमृतलाल नागर की कथा-दृष्टि —डॉ. मुकेश कुमार मिरोठा	13
अमृतलाल नागर के उपन्यास पाठों का महत्त्व —डॉ. नन्द किशोर	19
अमृतलाल नागर के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के स्वर —डॉ. वन्दना श्रीवास्तव	22
नागर के कथा साहित्य का कैनवास —आलोक कुमार सिंह, डॉ रमेश प्रताप सिंह	32
समकालीन सामाजिक तथा राजनीतिक परिवेश का रचनात्मक इतिहास 'बिखरे तिनके' —डॉ. अनिता पी. एल.	37
अमृतलाल नागर कृत बाल कथा-साहित्य —डॉ. देविका शुक्ल	44
नाच्यौ बहुत गोपाल : एक दृष्टि —डॉ. सुषमा पुरवार	52
तुलसी के व्यक्तित्व को विराट आकार प्रदान करती कृति 'मानस का हंस' —डॉ. आराधना सारवान	56
अमृतलाल नागर जी के उपन्यासों में चरित्र-सृजन और प्रस्तुति —डॉ. वर प्रसाद वाताला	60
अमृतलाल नागर के उपन्यास साहित्य में सामाजिक विवेचन —डॉ. पठान रहीम खान	64

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में गाँधी दर्शन — 69
—प्रा. डॉ. रणजीत जाधव

जिस्म, रूह और सियासत की आपसी जंग : सात घूँघटवाला मुखड़ा — 74
—डॉ. गोविन्द बुरसे

करवट : एक अवलोकन — 82
—डॉ. अनीता रावत

अमृतलाल नागर के बाल उपन्यास — 89
—डॉ. संजय जाधव

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में नारी चिन्ता, चिन्तन एवं सृजन — 100
—डॉ. रेखा प्रभुदास गाजरे

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक समस्याएँ — 116
—डॉ. जयंत डी. बोबडे

मानव की पीड़ा से प्रेरित रचनाकार : अमृतलाल नागर — 125
—प्रा. डॉ. मनोहर ग. चपळे

'अग्निगर्भा' उपन्यास में व्यक्त स्त्री-संवेदना — 130
—डॉ. अलका गडकरी

नाच्यौ बहुत गोपाल उपन्यास में दलित विमर्श — 135
—डॉ. सुधीर ग. वाघ

विनाश और संघर्ष का आक्रोश 'एटम बम' कहानी — 140
—डॉ. विजयकुमार एस. पैराटे

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में चित्रित साम्प्रदायिक समस्याएँ — 143
—प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार

अमृतलाल नागर का नाट्य साहित्य — 148
—डॉ. प्रतिमा येरेकार

'बिखरे तिनके' उपन्यास की प्रासंगिकता — 151
—प्रा. डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील

'अगर आदमी के दुम होती' रचना में व्यक्त हास्य-व्यंग्य — 156
—डॉ. रेणुका मोरे

सम्बन्धों की आत्मीयता और स्मृतियों की परस्परता का पूरक : अमृतलाल नागर 159
—प्रा. धोंडिवा रामराव भुरे

बाल साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर : अमृतलाल नागर 166
—डॉ. ज्योति एन. मंत्री

मध्यमवर्गीय समाज की समस्याओं का दस्तावेज : बूँद और समुद्र 171
—प्रा. डॉ. एस.आर. सांगोळे

अमृतलाल नागर के उपन्यास में सामाजिक चेतना 176
—प्रा. डॉ. व्ही.पी. चव्हाण

अमृतलाल नागर : साहित्य की लेखन शैली 179
—साळवे सतीश

'बूँद और समुद्र' उपन्यास में सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का चित्रण 185
—डॉ. अशोक श्यामराव मराठे

अमृतलाल नागर के उपन्यासों का धार्मिक मूल्यबोध 190
—डॉ. तीर्थराज राय

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में अभिव्यक्त मानवतावादी जीवनबोध 195
—प्रा. ज्ञानेश्वर भाऊराव जाधव

उपन्यासकार अमृतलाल नागर और उनके नारी सम्बन्धी उपन्यास 200
—प्रा. डॉ. मालती डी. शिंदे (चव्हाण)

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में चित्रित नारी 206
—डॉ. संजय गडपायले

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में चित्रित राजनीति 211
—प्रा. डॉ. रामकृष्ण बदने

अमृतलाल नागर के कथा साहित्य में मानवतावादी स्वर 215
—डॉ. सूर्यकांत शिंदे

अमृत और विष : सामाजिक यथार्थ का चित्रण 219
—प्रा. पाटील कल्याण शिवाजीराव

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ बोध 224
—डॉ. मोहन डमरे

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में गांधीवादी विचार धारा 231
—डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे

नाच्यौ बहुत गोपल की निर्गुणीया 235
—प्रा. डॉ. कल्याण गुरुनाव

सामाजिक दस्तावेज 'अमृत और विष' 238
—प्रा. डॉ मा. ना. गायकवाड़

बिखरे तिनके उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्याएँ और युवावर्ग का असफल विद्रोह 241
—डॉ. चांदणी लक्ष्मण पैचांगे

अमृतलाल नागर के 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास में नारी संघर्ष 245
—डॉ. जलालखान पठाण

नागर जी की मानवतावादी दृष्टि : भूख के सन्दर्भ में 249
—प्रा. डॉ. परविंदर कौर महाजन, प्रा. पुणे मीना भाऊराव

'मानस का हंस' उपन्यास में युगबोध 253
—प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधर गाडे

'बिखरे तिनके' उपन्यास में चित्रित राजनीतिक चेतना 258
—प्रा. डॉ. सुभाष नागोराव क्षीरसागर

उपन्यासकार अमृतलाल नागर 262
—प्रा. डॉ. जाधव अर्जुन रतन

अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यासों में युगबोध 268
—प्रा. डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव

अमृतलाल नागर की कहानियों में अभिव्यक्त समस्याएँ 272
—प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में मानवतावाद 275
—डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड़

'मानस का हंस' उपन्यास में व्यक्त समष्टिभाव 279
—प्रा. डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे

व्यष्टि और समष्टि के अनगिनत विसंगतियों का दस्तावेज बूँद और समुद्र 284
—डॉ. यशवंतकर संतोष कुमार

युगीन चुनौतियों तथा खतरों को झेलने वाला कथाकार अमृतलाल नागर 288
—डॉ. अनिलकुमार राठोड, डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे

आधुनिकता की परिप्रेक्ष्य में 'बूँद और समुद्र' 291
—डॉ विजय शिवराम पवार

साहित्य, संस्कृति और भाषा के अन्वेषी अमृतलाल नागर 294
—डॉ. कदम भगवान रामकिशन

उपन्यासकार अमृतलाल नागर 298
—डॉ. मीना साहेबराव खरात

नाच्यौ बहुत गोपाल उपन्यास में नारी जीवन की विवशता 302
—प्रा. डॉ. पजई एस.आर.

अमृतलाल नागर के उपन्यासों के पात्र एवं चरित्र-चित्रण 305
—प्रा. खुपसे मंगल संभाजीराव

एकदा नैमिषारण्ये ऐतिहासिक उपन्यास 309
—प्रा. माधवराव गजाननराव जोशी

सामाजिक अनुभव का संचित विश्वकोश 'बूँद और समुद्र' 313
—प्रा. डॉ. शेख मुखत्यार शेख वहाब

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक संवेदना 317
—डॉ. संजीवकुमार वी. नरवाडे

अमृतलाल नागर जी का संस्मरण साहित्य 321
—डॉ. जहीरुद्दिन र. पठान

भारतीय नारी तथा दलितों के उत्पीड़न की गाथा : नाच्यौ बहुत गोपाल 327
—प्रा. डॉ. श्रीरंग वट्टमवार

अमृतलाल नागर के 'युगावतार' नाटक का समीक्षात्मक अनुशीलन 332
—डॉ. मुकुंद कवडे, डॉ. भगवान जाधव

अमृतलाल नागर कृत 'बूँद और समुद्र' में सामाजिक यथार्थ 337
—प्रा. गावंडे तुकाराम पाराजी

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में व्यक्त सुधारवादी विचार 341
—डॉ. एस.एल. मुनेश्वर, प्रा. कसबे आम्रपाली

'बूँद और समुद्र' उपन्यास का सामाजिक मूल्यांकन 349
–प्रा. डॉ. रेविता व. कावळे

बूँद में समाया समुद्र : अमृतलाल नागर 354
–प्रा. सुनिल रा. मायस्कर

अमृतलाल नागर कृत 'नाच्यौ बहुत गोपाल' में स्त्री विमर्श 358
–प्रा. डॉ. रवीन्द्र कुमार शिरसाट

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन 366
–डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव

व्यक्ति और समाज की औपन्यासिक अभिव्यक्ति : 'बूँद और समुद्र' 371
–डॉ. मजीद शेख

लेखक परिचय *380*

नाच्यौ बहुत गोपल की निर्गुणीया

प्रा. डॉ. कल्याण गुरुनाथ

अमृतलाल नागर हिन्दी उपन्यास के क्षेत्रों में प्रयोगधर्मी उपन्यासकार हैं। उन्होंने भारतीय समाज की पौराणिक परंपरा, ऐतिहासिक सन्दर्भ, सांस्कृतिक जीवन और धार्मिक विचार तथा सामाजिक संस्कृति को नजदीक से देखा और भारतीयता से पूरे निष्ठा से जुड़े रहकर सड़ी गली काई को दर्शाने में सफल रहे।

नागरजी के 'नाच्यौ बहुत गोपाल' इस उपन्यास की नायिका निर्गुणी माँ नामक देवी अर्थात ब्राह्मणी समुचे उपन्यास के केन्द्र में रही है। ब्राह्मण नाना-नानी के घर अपना बचपण बिताकर भी यौवन के पहले अहसास में ही नैतिकता के कच्चे धागे तोड़ बैठती है। निर्गुणीया संस्कारों से जलकर मेहतरानी बनने के अन्तर्द्वन्द्वों को पुरी इमानदारी और सच्चाई तथा मार्मिकत्ता के साथ प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास इन्टरव्यू की शैली में निर्गुणीया के बीते हुए समय और जीवन की घटनाओं को सुन-सुनकर लिपीबद्ध किया है।

उपन्यास में निर्गुणीया के जीवन का अध्ययन किया जाय तो ज्ञात होता हैं। बचपन से ही नाना-नानी के ब्राह्मण संस्कारों में वह पत्नी और पिता के साथ रहते हुए काम सम्बन्धी मूल्यों की अराजकत्तापूर्ण स्थिती में जीती रही। उसके पिता ऐसे वातवरण में रहे जहाँ नैतिक मूल्यों का कोई प्रश्न ही उभरता नहीं, वह निर्गुण संस्कारों से मेहतरानी बनकर भी अपने पती के एकनिष्ट पुजारिन रही बल्की मेहतर मोहन के प्रति उसका लगाव हर परिस्थितियों में अटूट है। वैसे निर्गुणीवा जीवन में अनेक ऐसे कटू प्रसंग है पंडित बटूकप्रसाद की पत्नी उसके देह के साथ निर्मम खिलवाड़ करवाता है। अन्य नये-नये प्रेमियों को फसाने में निर्गुणीया का उपयोग करती है। जब वह देखती है निर्गुणीया उसके मार्ग की बाधा बन गई तो वह अत्यन्त निर्ममता से अपने बूढ़े प्रेमी सेठ मसुरिमादीन ब्याह करा देती हे। मसुरिमादीन के विवाह के पश्चात निर्गुणीया के जीवन में ऐसी त्रासदी आरंभ होती है ज्यों की दमनीय है। कहाँ सोलह वर्ष की निर्गुणीया के मानसिक क्षुधा को तृप्त करने में असमर्थ थी। वह जिस वातावरण में रही उसी के कारण उसके मन में कामवासना प्रतिदिन प्रबल होती रही और मसुरिमादीन की निर्जीव चेष्टाओं

₹ 750/-

ISBN 978-93-86236-21-0

A. R. PUBLISHING CO.
Publishers & Distributors
1/11829 Panchsheel Garden, Naveen Shahdara
Delhi-110032, Mob. 09968084132, 09910947941
e-mail: arpublishingco11@gmail.com